हा । ह

। वीजनो शेसरी जस्य न ध्याङ्गला विषि ॥ १८॥ निद्विन्धां स्सिह साग्रेकिशिकास्यक्षमवस्त्रिन। अग्रिमम्येकामुकास्त्रकाम्यशोकानिमुक्तकाः ॥ १ए॥ कार कं कर्त्र का माद्याःकारिकायानना नटी। इति विवर्गासीको नापितादिककमिच ॥ २०॥ कावृकः कुकु ठेकाकेपीतमुग्डिड थकामुकः। वश्नामुनामिष्वासेनमाठिक्षार्नार्सा ३१॥ नार्नेपक्ष्यादिपाश्नासि कायागिनी भिदि। स्वर्धादिदा बेमेचास्या स्वर्गाययी नवा मुदे॥ २२॥ ऋ मद्य व स्तु मूल्येका रूर्य वृष्युक प चयोः । रोमाल्यान्ध्सरीकांस्याःकाकी पटेा स्याखयाः॥ २३॥ विम्पानावृक्षभिद्यज्ञेनीरकानिष्ठ्रे होमा। कीचना ध्वनिमद्दंशे दे त्यभेदे दुमा नारे॥ २४॥ जुलकंप च्यादि स्वा कस मन्बये य छो ल के। कुल कः कुल प्रधा नेबल्मी केवा किन्दु के ॥ ३५ ॥ कुलिक क्तुन् श्रेष्ठेट् मनागविश्षयोः। नुशिकोम्निभेट्स्यात्फाले सर्जवि भीतने॥ २६॥ श्रु इन नःपाम रेखल्पेक निष्ठेदः खिने खसे। कूपकागु ग्रावृक्षस्याने लपाचेनुन स्रे॥ २७॥ नू विनाक्षीर विवेती कु त्रिवाया त्र गुडा हो। आसे खाक विवास् का हि व वी का ल व वे वी ॥ २ प। कार्क नुज्य सिखान्व की ल कपृणा स्याः। की नुजन मेगी च्छायामु स्व नुने मिदि॥ २० ॥ पार मण्यीगतस्या तेमङ्ग लोदाहर् वयाः। गीतांदीभागकालेचकाशिकः शक्ष घूकयाः॥ ३०॥ के। शक्रागुमाना हित्रशिडको न कुले मुने। के कि कि चित्रहिता न ही। खन कः स निधन स्क